International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 12-14

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 12-14
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-07-2019
Accepted: 10-08-2019

डॉ० संजय कुमार शर्मा
(एम०ए०,बी०एड०,नेट,पी–एच०डी०)
प्रधानाचार्य, श्री कार्ष्णि हरिनामदास इण्टर कॉलेज, महावन (मथुरा), उ०प्र०, भारत

Correspondence
डॉ० संजय कुमार शर्मा
(एम०ए०,बी०एड०,नेट,पी–एच०डी०)
प्रधानाचार्य, श्री कार्ष्णि हरिनामदास इण्टर कॉलेज, महावन (मथुरा), उ०प्र०, भारत

भर्तृहरि के शतकत्रय में नारी का चित्रण

डॉ० संजय कुमार शर्मा

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों में श्री भर्तृहरि जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। उनके द्वारा विरचित शतकत्रय– नीतिशतक, श्रृंगारशतक और वैराग्यशतक चिरकाल से ही संस्कृत साहित्य को अपनी आभा से दैदीप्यमान करते रहे हैं। मनुष्य अपने जीवनकाल में जीवन–यापन के लिए प्रारम्भ से ही अथक परिश्रम करता है, जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके। वह नौकरी, व्यापार, मजदूरी, सेवा इत्यादि अनेकों माध्यमों से धनार्जन करके अपना जीवन निर्वहन करता चला आ रहा है परन्तु धनार्जन करके भी वह अन्य सुख–समृद्धि तो प्राप्त कर सकता है लेकिन पतिव्रता स्त्री तो उसे भगवत् कृपा से ही प्राप्त हो सकती है–

''सती प्रियतमा, तुष्टे विष्टपहारिणीष्टहरौ संप्राप्यते देहिना ।। नी०श० श्लोक–25, पृष्ठ–

प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा अपना कल्याण चाहता है। उसका यह उद्देश्य होता है कि उसके कर्म इस प्रकार के हों जिससे उसको सद्गति प्राप्त हो सके, परन्तु कभी–कभी वह ऐसे कार्य कर जाता है जो उसके लिए निषिद्ध होते हैं। इसी प्रकार के निषिद्ध कर्मों की श्रेणी में से मार्गदर्शन करते हुए श्री भर्तृहरि जी कहते हैं कि शास्त्रानुसार परस्त्री चर्चा के समय मौन धारण करना ही श्रेयस्कर मार्ग है–

युवतिजनकथामूकभावः परेषाम्।
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्थाः।। नी०श० श्लोक–26, पृष्ठ–

भर्तृहरि जी ने स्त्रियों के स्वभाव के विषय में श्रृंगारशतक में उल्लेख करते हुए लिखा है कि स्त्रियों के नाज–नखरे पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ब्रह्मास्त्र का कार्य करते हैं। यह स्त्रियों का एक अमोघ अस्त्र हुआ करता है जो कभी निष्फल नहीं होता। नाज–नखरे स्त्रियों का स्वाभाविक गुण होता है। यदि आभूषण स्त्रियों की शोभा को सौ गुना बढ़ाते हैं तो उनके नखरे उसे हजार गुना बढ़ा देते हैं।
एक प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक ''Thomas Campbell'' ने स्त्रियों के आँसूओं के विषय में लिखा है कि– ''सुन्दरी के आँसू उसकी मुस्कान की अपेक्षा प्यारे लगते हैं।''
Beauty's tears are lovelier than her smile.
-Thomas Campbell श्रृं०श०,पृ०–7
इसी जैसे भाव को पुष्ट करता हुआ एक श्लोक श्रृंगारशतक में भी प्राप्त होता है–

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया
पराङ्मुखैरर्द्धं कटाक्षवीक्षणैः।
वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया
समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः।। –श्रृं०श०,श्लोक–2

अर्थात् मन्द–मन्द मुस्कुराना, लजाना, भयभीत होना, मुँह फेर लेना, तिरछी नजर से देखना, मीठी–मीठी बातें करना, ईर्ष्या करना, कलह करना और अनेक तरह के हाव–भाव दिखाना ये सब स्त्रियों में पुरुषों को बन्धन में फसाने के लिए ही होते हैं, इसमें सन्देह नहीं।
जिस प्रकार से एक मकड़ी अपने शिकार को फसाने के लिए जाल बुनती है और कीट–पतंगे जब उस जाल के सम्पर्क में आकर फँस जाते हैं तो वह उनको खाकर अपनी क्षुधा शान्त करती है। उसी प्रकार से स्त्रियाँ पहले तो पुरुषों के साथ इस प्रकार का प्रेम व्यवहार करती हैं, जिससे पुरुष उनके प्रेमपाश

में जकड़ जायें और जब पुरुष इनके चंगुल में फँस जाता है तो वे ऐसे पुरुषों का विवश कर देती हैं कि वे पुरुष उनकी इच्छानुसार उनकी सब बातें मानें और जब वे उनकी बातें मानने में जरा सी भी असमर्थता प्रकट करते हैं तों वे अपने नाज–नखरे दिखाना प्रारम्भ कर देतीं हैं–

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति।
एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति।। शृं०श०,श्लोक–21

अर्थात् चतुर मृगनयनी स्त्रियाँ पुरुषों के हृदय में एक बार दया से घुसकर उसे मोहित करती हैं, मदोन्मत करती हैं, तरसाती हैं, चिढ़ातीं हैं, धमकाती हैं, रमण करती हैं और विरह में दुःख देती हैं। ऐसा कौन सा काम है, जिसे ये मृगलोचनी नहीं करतीं हैं।
जिस प्रकार लोभी मनुष्य की धन–पिपासा कभी शान्त नहीं होती है, उसकी तृष्णा सुरसा के मुख के समान उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती ही रहती है। अगर उसके पास सौ रूपये होते हैं तो वह हजार की कामना करता है। हजार मिलने पर लाख, लाख से करोड़, करोड़ से अरब इस प्रकार उसकी पिपासा कभी समाप्त नहीं होती है। उसी प्रकार कामी पुरूष की प्रवृत्ति भी होती है। जब तक वह अपनी प्रेमिका को देखता नहीं है तब तक उसे देखने की इच्छा बनी रहती है, जब देख लेता है तो उसे आलिंगन की इच्छा रहती है, जब आलिंगन कर लेता है तो उससे कभी अलग न होने की इच्छा करता है–

अदर्शने दर्शनमात्रकामा दृष्ट्वा परिष्वङ्गरसकलोला।
आलिङ्गितायां पुनरायताक्ष्यामाशास्महे विग्रहयोरभेदम्।।
शृं०श०,श्लोक–23

भर्तृहरि जी ने स्त्रियों के विषय में वर्णन करते हुए शृंगारशतक में लिखा है कि न जाने क्या ऐसा कारण है कि संसार स्त्रियों के विषय में मदोन्मत्त सा रहता है। वह अपने उचित अनुचित कर्मों के द्वारा भी उनको प्राप्त करने की चेष्टा करता ही रहता है। जबकि वास्तविकता यह है कि स्त्री के विषय में चिन्तन करने मात्र से ही मन का सन्ताप बढ़ जाता है तथा स्पर्शमात्र से ही मोह उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार समस्त अवगुणों की खान होने पर भी उसे प्राणप्यारी क्यों कहा जाता है–

स्मृता भवति तापाय दृष्टा चोन्मादवर्द्धिनी।
स्पृष्टा भवति मोहाय सा नाम दयिता कथम्।। शृं०श०,श्लोक–73

परन्तु इसमें बेचारे पुरुष का क्या दोष है ? जब स्त्रियाँ उसे रिझाने के लिए अपने नाज–नखरे दिखाती हैं तो वह मन्त्रमुग्ध सा हो जाता है और तत्पश्चात् वह उसके इशारों पर नाचने लगता है। उसकी स्थिति उसी भ्रमर के समान हो जाती है जो फूल की स्वाभाविक लालिमा पर मोहित होकर उसका रसपान करने की लालसा से उसके ही चारों ओर गुंजन करता रहता है–

लीलावतीनां सहसा विलासास्त एव मूढस्य हृदि स्फुरन्ति।
रागो नलिन्या हि निसर्गसिद्धस्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडङ्घ्रिः।।
शृं०श०,श्लोक–77

मनुष्य आजीवन भोग–विलासों के पाश से मुक्त नहीं रह पाता। वह अथक परिश्रम करके धनार्जन करता है और खून पसीने की कमाई को अपनी नासमझी के कारण भोग विलासों में व्यय कर देता है और प्रसन्न होता है कि उसने भोग विलासों का भोग लिया है परन्तु सत्य इससे परे होता है। सत्य तो यह होता है कि भोगों ने ही उसे भोग लिया होता है। वह कठिन परिश्रम करके तप करता है और वह यह सोच–सोच कर आत्मसन्तुष्टि का अनुभव करता है कि उसने तप को तपा है लेकिन वह तप को नहीं तपता बल्कि तप ही उसे तपा देता है। वह यह मानकर बड़ा खुश होता है कि उसके द्वारा प्रतिदिन समय को व्यतीत किया जा रहा है पर सच तो यह होता है कि समय ही उसे व्यतीत कर रहा होता है। इसी प्रकार मनुष्य की इच्छाऐं कभी समाप्त नहीं होती है बल्कि प्रतिदिन उनमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। मनुष्य इच्छाऐं कर–कर के बूढ़ा हो जाता है पर उसकी इच्छाऐं कभी बूढ़ी नहीं होती हैं–

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णावयमेव जीर्णाः।। वै०श०, श्लोक–12

और भी–

अतिक्रान्तः कालो लटभललनाभोगसुभगो।
भ्रमन्तः श्रान्ताः स्मः सुचिरमिह संसारसरणौ।। वै०श०, श्लोक–32

अर्थात् जेवरों से सजी हुई स्त्रियों के भोगने योग्य जवानी चली गई और हम चिरकाल तक विषयों के पीछे दौड़ते थक भी गये।
वैराग्यशतक में स्त्री संग के विषय में भर्तृहरि जी बताते हैं कि स्त्री संग से जो सुख प्राप्त होता है वह क्षणिक होता है। अतः उस क्षणिक सुख के स्थान पर शाश्वत सुख की कामना करनी चाहिए और शाश्वत सुख उसे स्त्री के साथ संग करने से नहीं मिलेगा बल्कि वह तो उसे मैत्री, करुणा और बुद्धि के साथ संग करने से ही मिलेगा। इसलिए मैत्री, करुणा और बुद्धि रूपी वधू के साथ संग करना चाहिए–

विरमत बुधा योषित्संगात्सुखात्क्षणभंगुरात्।
कुरुत करुणामैत्रीप्रज्ञावधूजनसंगमम्।। वै०श०, श्लोक–62

मनुष्य के अन्तर्चक्षु जब तक अज्ञानान्धकार से आच्छादित रहते है। तब तक वह ईशप्राप्ति से दूर रहता है तथा जब तक काम से उसकी बुद्धि भ्रमित रहती है तब तक वह सोत जागते हर समय बस स्त्री का ही चिन्तन करता रहता है। उसकी बुद्धि इस प्रकार भ्रमित हो जाती है कि उसे सारा संसार 'स्त्री रूप' ही दिखाई देता है। इसलिए उसे इस मोहान्धकार को दूर करना चाहिए और जब यह भ्रम जनित मोहान्धकार दूर हो जाता है तो ज्ञानचक्षु जाग्रत हो जाते हैं और उसकी दृष्टि समान हो जाती है तथा सर्वत्र ब्रह्मरूप दिखाई देता है–

यदासीदज्ञानं स्मरतिनिरसंस्कारजनितं
त्दा दृष्टं नारीमयमिदमशेषं जगदपि।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकाञ्जनजुषां
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवमपि ब्रह्मेति मनुते।। वै०श०, श्लोक–84

सार रूप में हम कह सकते हैं कि पूर्वोक्त वर्णन में हमने स्त्रियों में चाहे कितने भी गुण–दोष दिखाये हो परन्तु यह अटल सत्य है कि यह सृष्टि स्त्री के बिना अधूरी ही है। पुरुष स्त्री के बिना और स्त्री पुरुष के बिना पूर्ण नहीं हैं। स्त्री–पुरुष के संयुक्त रूप से ही सृष्टि चलती है। यही सन्देश हमें भगवान् शंकर का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप भी देता है।
अतः मनु महाराज ने अपने ग्रन्थ मनुस्मृति में लिखा है कि स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए क्योकि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।। मनु०, अ०–3, श्लोक–56

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, गंगासागर, टीकाकार, नीतिशतकम् (वाराणसी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, सन् 1995)।
2. पाण्डेय, जनार्दन शास्त्री, नीतिशतकम् (वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास, सन् 2002)।
3. वैद्य, बाबू हरिदास, अनुवादक, नीतिशतक (मथुरा, हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, सन् 1999)।
4. वैद्य, बाबू हरिदास, अनुवादक, वैराग्यशतक (मथुरा, हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, सन् 1999)।
5. वैद्य, बाबू हरिदास, अनुवादक, श्रृंगारशतक (मथुरा, हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, सन् 1985)।
6. सक्सेना, सुरेन्द्रनाथ, व्याख्याकार, मनुस्मृति (जयपुर, अनु प्रकाशन, सन् 2009)।